

Padma Bhushan



PROF. KAPIL KAPOOR

Prof. Kapil Kapoor is former Professor of English and Concurrent Professor Sanskrit Studies, Dean SLLCS, Rector, JNU, New Delhi is known for his striven to 'Indianite' Higher Education by integrating Indian knowledge systems and establishing dedicated Institutes.

2. Born on 17th November, 1940, Prof. Kapoor received his MA from University of Delhi followed by M. Litt and Phd from JNU. It was Professor Kapoor's efforts that four of India's acknowledged gyana-grantha - Astadhyayi, Natyasastra, Vakyapadiya, Yogasutra – were integrated into the English Post-Graduate syllabus in JNU in 1975; second, the given Research-Paradigm was reversed by applying Indian Theories to Western Data ending Indian Academy's Theory-Subordination to the West; third, true to the parivrajaka parampara, he travelled expounding India's knowledge systems, and the value of atmanirbharagyana to decolonize the Indian mind, instilling self-respect in young minds to enable them to interact with other traditions on level ground.

3. Prof. Kapoor's books also tries for relocating the Indian mind in India's own knowledge heritage some are Indian Knowledge Systems (2 Vols); Dimensions of Panini Grammar; Text and Interpretation in the Indian Tradition; Bharat ki Katha Parampara mein Rati-Bhakti (Hindi); Knowledge Traditions and Practices of India and his edited Encyclopaedia of Indian Poetics and the 11 Volume Encyclopaedia of Hinduism (2012).

4. Prof. Kapoor has held many important positions such as Member of PM's Amrut Mahotsav Committee proposed a multi-media program, Defending Freedom a Civilizational Obligation; as Chairman IAAS Shimla, 1918, in a radical move, research allowed in all Schedule VIII languages; as Chairman of MHRD's Language Expert Committee recommended a Comprehensive Language Policy for India 2016 enforcing State Languages as the medium of instruction at all levels of education to radically 'indianise' India's Education; as Chancellor of MGAH University Wardha, an international MA program in Indian Culture was proposed; as Chairman of the Editorial Board of IHRC of the National Archives, focused on States', such as Rajasthan's, archives; as Visiting Professor, Irish Academy of Cultural Heritages, University of Ulster, UK, delivered the in the House of Lords 2008, produced a parallel text, Mutual regards: Irish-Indian Writings (2017), and was the nominated External Member, India Studies program, University of Dublin. His writings / lectures on the Ten Gurus, and the affinities between the Rigveda – Punjab's gift to India - and Sri Guru Grantha Sahib – India's gift to Punjab – have positively impacted Punjab. On 8th November 2019, a day before the PM's inauguration of the Kartarpur Corridor, delivered the Keynote Address at the Punjab Government's International Conference on Sri Guru Nanak Dev at Sultanpur Lodhi.

5. Besides many Fellowships, Prof. Kapoor, has been honored and awarded with: Akhil Bharatiya Shikshak Samman, Shiksha Bhushan (2021); Rishi Samman by Shankar Shiksayatan, New Delhi (2022); Visista Samman of Kunwar NP Singh Kalyankari Trust Gorakhpur (2012) awarded by Mahant Adityanath Yogi ji; the Uberoi Foundation California USA (2011) Award; Shiksha Sanskriti Utthana Nyasa, New Delhi (2010), and Sanskrit Mitra award by MHRD, Government of India (2003).



प्रो. कपिल कपूर

प्रो. कपिल कपूर अंग्रेजी के पूर्व प्रोफेसर और संस्कृत अध्ययन के प्रोफेसर, डीन एसएलएलसी, रेक्टर, जेएनयू, नई दिल्ली को भारतीय ज्ञान प्रणालियों को समेकित करके और विशिष्ट संस्थानों की स्थापना करके उच्च शिक्षा को 'भारतीय' बनाने के उनके प्रयास के लिए जाना जाता है।

2. 17 नवंबर, 1940 को जन्मे, प्रो. कपूर ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एमए और उसके बाद जेएनयू सेएम. लिट और पीएच. डी की। ये प्रोफेसर कपूर के प्रयास थे कि भारत के चार प्रतिष्ठित ज्ञान-ग्रंथ-अष्टाध्यायी, नाट्यशास्त्र, वाक्यपदिया, योगसूत्र को 1975 में जेएनयू के अंग्रेजी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में शामिल किया गया; दूसरा, पश्चिमी डेटा के स्थान पर भारतीय सिद्धांतों को लागू करके मौजूदा अनुसंधान-प्रतिमान को उलट दिया गया, जिससे भारतीय शिक्षा संस्थानों की सिद्धांत के संबंध में पाश्चात्य अधीनता समाप्त हो गई; तीसरा, परिव्राजक परंपरा के अनुरूप, उन्होंने भारत की ज्ञान प्रणालियों की व्याख्या करते हुए यात्राएं की और भारतीय मानसिकता को औपनिवेशिक प्रवृत्ति से मुक्त करने के लिए आत्मनिर्भर ज्ञान का महत्व समझाया, युवाओं के मन में आत्म-सम्मान की भावना पैदा की ताकि वे बराबरी के स्तर पर आकर अन्य परंपराओं के साथ संवाद कर सकें।

3. प्रो. कपूर की पुस्तकें भारतीय मानस को भारत की अपनी ज्ञान विरासत पर ध्यान दिलाने का प्रयास करती हैं, इनमें से कुछ पुस्तकें हैं: भारतीय ज्ञान प्रणाली (2 खंड); पाणिनी व्याकरण के आयाम; भारतीय परंपरा में पाठ और व्याख्या; भारत की कथा परंपरा में रति-भक्ति (हिंदी); भारत की ज्ञान परंपराएं और पद्धतियां और भारतीय काव्यशास्त्र का संपादित विश्वकोश तथा हिंदू धर्म का 11 खंड का विश्वकोश (2012)।

4. प्रो. कपूर ने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है, जैसे प्रधानमंत्री की अमृत महोत्सव समिति के सदस्य जैसी मल्टी-मीडिया कार्यक्रम, स्वतंत्रता की रक्षा के सभ्यतागत दायित्व का प्रस्ताव करने वाली; आईएएस शिमला, 1918 के अध्यक्ष, जिसके तहत एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, अनुसूची VIII की सभी भाषाओं में अनुसंधान की अनुमति देना था; मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भाषा विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष जिसने भारत के लिए व्यापक भाषा नीति 2016 सिफारिश की थी जिससे भारत की शिक्षा का बुनियादी रूप से 'भारतीयकरण' करने के लिए शिक्षा के सभी स्तरों पर माध्यम के रूप में राज्य की भाषाओं को लागू किया गया है; एमजीएच विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति के रूप में, भारतीय संस्कृति में एमए का अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम का प्रस्ताव किया गया; राष्ट्रीय अभिलेखागार के आईएचआरसी के संपादकीय बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में, राजस्थान जैसे राज्यों के अभिलेखागार पर ध्यान केंद्रित किया गया; ब्रिटेन के उल्स्टर विश्वविद्यालय के आयरिश एकेडमी ऑफ कल्चरल हेरिटेज के विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में, हाउस ऑफ लॉर्ड्स 2008 में भाषण दिया, एक समानांतर पाठ, पारस्परिकसंबंध: आयरिश-भारतीय लेखन (2017) तैयार किया तथा वे डबलिन विश्वविद्यालय के भारत अध्ययन कार्यक्रम के नामित बाहरी सदस्य थे। दस गुरुओं पर उनके लेखन/व्याख्याओं और भारत को पंजाब का उपहार ऋग्वेद और पंजाब को भारत का उपहार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बीच संबंधों ने पंजाब को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। 8 नवंबर 2019 को, प्रधानमंत्री द्वारा करतारपुर कॉरिडोर के उद्घाटन से एक दिन पहले, सुल्तानपुर लोधी में श्री गुरु नानक देव पर पंजाब सरकार के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य भाषण दिया।

5. कई फैलोशिप के अलावा, प्रो. कपिल कपूर को अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान, शिक्षा भूषण (2021); शंकर शिक्षायतन नई दिल्ली द्वारा ऋषि सम्मान, (2022); महंत आदित्यनाथ योगी जी द्वारा कुंवर एनपी सिंह कल्याणकारी ट्रस्ट गोरखपुर (2012) का विशिष्ट सम्मान; उबेराय फाउंडेशन कैलिफोर्निया यूएसए पुरस्कार (2011); शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली (2010), और मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संस्कृत मित्र पुरस्कार (2003) प्रदान किए गए हैं।